Grade 9 HINDI worksheet 1

Q.N No	Question
1.	लेखक किसके रोने का कारण नहीं जान सका ? (A) बच्चे के (B) बुढ़िया के (C) दूकान वाले के (D) इनमें से कोई नहीं
2.	कहानी में लोगों ने किसे 'पत्थर दिल' कहा है ? **(A)** लेखक को **(B)** बुढ़िया को **(C)** भगवाना को **(D)** पड़ौसिन को
3.	बुढ़िया के बच्चे की मृत्यु कैसे हुई ? **(A)** दुर्घटना से **(B** बिमारी से **(C)** साँप के काटने से **(D)** खेत में गिरने से
4.	समाज में मनुष्यों का अधिकार और उसका दर्जा कैसे सुनिश्चित होता है ? **(A)** रहन-सहन से **(B)** खान-पान से **(C)** पोशाक से **(D)** क, ख दोनों
5.	बुढ़िया के दुःख को देख कर लेखक को किसकी याद आई ? **(A)** अपनी माँ की **(B)** गाँव की **(C)** संभ्रांत महिला की **(D)** बच्चों की
6.	खरबूजे बेचने वाली बुढ़िया के बेटे का क्या नाम था ? **(A)** भगवाना **(B)** भगावना **(C)** भागवाना **(D)** भागवन
7.	लेखक के अनुसार किसे दुःख मनाने का अधिकार नहीं है ? **(A)** बुढ़िया को **(B)** पड़ोसी को **(C)** गरीबों को **(D)** बच्चों को
8.	बुढ़िया का हाल पूछने में लेखक को किस के कारण परेशानी थी? **(A)** पोशाक के **(B)** पड़ोसी के **(C)** दुकानदार के **(D)** बच्चों के
9.	लेखक के अनुसार बुढ़िया को कोई क्यों उधार नहीं देता ? **(A)** वह गरीब थी **(B)** उसका पति नहीं था **(C)** उसके बेटे की मृत्यु हो गई थी **(D)** इनमे से कोई नहीं
10	साँप के काटने के कारण लड़के का शरीर कैसा हो गया था? **(A)** ठंडा **(B)** काला **(C)** सफ़ेद **(D)** कड़ा

<u>निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए</u>

प्रश्न **1.**किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें क्या पता चलता है**?1**

उत्तर-'दुःख का अधिकार' लेखक यशपाल जी द्वारा रचित कहानी है। किसी व्यक्ति की पोशाक देखकर हमें समाज में उसका दर्जा तथा उसके अधिकारों का ज्ञान होता है।

प्रश्न **2.**खरबूज़े बेचने वाली स्त्री से कोई खरबूजे क्यों नहीं खरीद रहा था**?**

उत्तर- 'दुःख का अधिकार' लेखक यशपाल जी द्वारा रचित कहानी है। खरबूजे बेचने वाली अपने पुत्र की मौत का एक दिन बीते बिना खरबूजे बेचने आई थी। सूतक वाले घर के खरबूजे खाने से लोगों का अपना धर्म भ्रष्ट होने का भय सता रहा था, इसलिए उससे कोई खरबूजे नहीं खरीद रहा था।

प्रश्न **3..**मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्व है**?**

उत्तर-'दुःख का अधिकार' लेखक यशपाल जी द्वारा रचित कहानी है। मनुष्य के जीवन में पोशाक का बहुत महत्व है। पोशाक ही मनुष्य की सामाजिक और आर्थिक स्थिति दर्शाती है। पोशाक ही मनुष्य को मनुष्य में भेद करती है। पोशाक ही उसे आदर का पात्र बनाती है तथा नीचे झुकने से रोकती है।

प्रश्न **4.**पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है**?**

उत्तर-'दुःख का अधिकार' लेखक यशपाल जी द्वारा रचित कहानी है। जब हम अपने से कम दर्जा रखने वाले मनुष्य के साथ बात करते हैं तो हमारी पोशाक हमें ऐसा नहीं करने देती। हम स्वयं को बड़ा मान बैठते हैं और सामने वाले को छोटा मानकर उसके साथ बैठने तथा बात करने में संकोच अनुभव करते हैं

प्रश्न **5.**लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया**?**

उत्तर-'दुःख का अधिकार' लेखक यशपाल जी द्वारा रचित कहानी है। लेखक उस स्त्री के रोने का कारण इसलिए नहीं जान पाया क्योंकि रोती हुई स्त्री को देखकर लेखक के मन में एक व्यथा उठी पर अपनी अच्छी और उच्च कोटि की पोशाक के कारण फुटपाथ पर नहीं बैठ सकता था।

प्रश्न **6.**भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था**?**

उत्तर- 'दुःख का अधिकार' लेखक यशपाल जी द्वारा रचित कहानी है। भगवाना शहर के पास डेढ़ बीघा जमीन पर हरी तरकारियाँ तथा खरबूजे उगाया करता था। वह रोज ही उन्हें सब्जी मंडी या फुटपाथ पर बैठकर बेचा करता था। इस प्रकार वह कछिआरी करके अपने परिवार का निर्वाह करता था।

प्रश्न **7.**बुढ़िया के दुःख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आई**?**

उत्तर-'दुःख का अधिकार' लेखक यशपाल जी द्वारा रचित कहानी है। लेखक ने बुढ़िया के पुत्र शोक को देखा। उसने अनुभव किया कि इसे बेचारी के पास रोने-धोने का भी समय और अधिकार नहीं है। तभी उसकी तुलना में उसे अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद आ गई। वह महिला पुत्र शोक में ढाई महीने तक पलंग पर पड़ी रही थी।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (**50-60** शब्दों में) लिखिए**-**

प्रश्न **1.**बाज़ार के लोग खरबूजे बेचने वाली स्त्री के बारे में क्या-क्या कह रहे थे**?** अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-'दुःख का अधिकार' लेखक यशपाल जी द्वारा रचित कहानी है। बाजार के लोग खरबूजे बेचने वाली महिला के बारे में तरह-तरह की बातें करते हुए ताने दे रहे थे और धिक्कार रहे थे। उनमें से कोई कह रहा था कि बुढ़िया कितनी बेहया है जो अपने बेटे के मरने के दिन ही खरबूजे बेचने चली आई। दूसरे सज्जन कह रहे थे कि जैसी नीयत होती है अल्लाह वैसी ही बरकत देता है। सामने फुटपाथ पर दियासलाई से कान खुजलाते हुए एक आदमी कह रहा था, "अरे इन लोगों का क्या है ? ये कमीने लोग रोटी के टुकड़े पर जान देते हैं। इनके लिए बेटा-बेटी खसम-लुगाई, ईमान-धर्म सब रोटी का टुकड़ा है।

प्रश्न **2.**पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला**?**

उत्तर-'दुःख का अधिकार' लेखक यशपाल जी द्वारा रचित कहानी है। पास पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को पता चला कि बुढ़िया का एक जवान पुत्र था—भगवाना। वह तेईस साल का था। वह शहर के पास डेढ़ बीघे जमीन पर सब्जियाँ उगाकर बेचा करता था। एक दिन पहले सुबह-सवेरे वह पके हुए खरबूजे तोड़ रहा था कि उसका पैर एक साँप पर पड़ गया। साँप ने उसे डस लिया, जिससे उसकी मौत हो गई। उसके मरने के बाद घर का गुजारा करने वाला कोई नहीं था। अतः मज़बूरी में उसे अगले ही दिन खरबूजे बेचने के लिए बाज़ार में बैठना पड़ा।

प्रश्न **3.**लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या-क्या उपाय किए**?**

उत्तर- 'दुःख का अधिकार' लेखक यशपाल जी द्वारा रचित कहानी है। लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया ने वह सब उपाय किए जो उसकी सामर्थ्य में थे। साँप का विष उतारने के लिए झाड़ फूंक करने वाले ओझा को बुला लाई ओझा ने झाड़ फेंक की। नाग देवता की पूजा की गई और घर का आटा और अनाज दान-दक्षिणा के रूप में दे दिया गया। उसने अपने बेटे के पैर पकड़कर विलाप किया, पर विष के प्रभाव से शरीर काला पड़ गया और वह मृत्यु को प्राप्त कर गया।

प्रश्न **4.**लेखक ने बुढ़िया के दुख का अंदाज़ा कैसे लगाया**?**

उत्तर- 'दुःख का अधिकार' लेखक यशपाल जी द्वारा रचित कहानी है। लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाजा लगाने के लिए अपने पड़ोस में रहने वाली एक संभ्रांत महिला को याद किया। उस महिला का पुत्र पिछले वर्ष चल बसा था। तब वह महिला ढाई मास तक पलंग पर पड़ी रही थी। उसे अपने पुत्र की याद में मूर्छा आ जाती थी। वह हर पंद्रह मिनट बाद मूर्छित हो जाती थी। दो-दो डॉक्टर हमेशा उसके सिरहाने बैठे रहा करते थे। उसके माथे पर हमेशा बर्फ की पट्टी रखी रहती थी। पुत्र शोक मनाने के सिवाय उसे कोई होश-हवास नहीं था, न ही कोई जिम्मेवारी थी। उस महिला के दुःख की तुलना करते हुए उसे अंदाजा हुआ कि इस गरीब बुढ़िया का दुःख भी कितना बड़ा होगा।